World View Research Bulletin

An International Multidisciplinary Research Journal

Issue 1, Volume 1, No.2, Jan 2025

आर्थिक विकास में आधुनिक भारतीय महिला उद्यमिता का योगदान: एक विश्लेषण

डा.अंजना चतुर्वेदी, शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर महा. सागर(म.प्र.)

डा. सारांश राजोरिया, शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महा. देवरी, सागर(म.प्र.)

सरांश:

भारत में महिला उद्यमिता के परिदृश्य में हाल के वर्षों में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है, जिसने देश की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह व्यापक शोधपत्र समकालीन भारतीय महिला उद्यमियों के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालता है, जो आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने, रोजगार के अवसर पैदा करने और नवाचार को बढ़ावा देने में उनके प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करता है। 2010 से 2023 तक के आंकड़ों पर आधारित, विश्लेषण महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों की वृद्धि, विभिन्न क्षेत्रों में उनके वितरण और सकल घरेलू उत्पाद और रोजगार दरों पर उनके समग्र प्रभाव की जांच करता है। अध्ययन भारत के आर्थिक विकास में महिला उद्यमियों के योगदान को और बढ़ाने के लिए सहायक नीति उपायों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

विशेष-शब्द: *महिला उद्यमिता, आर्थिक विकास, भारत, रोजगार सृजन, एमएसएमई क्षेत्र, लैंगिक समानता, क्षेत्रीय वितरण, महिला स्वामित्व वाले उद्यम, व्यवसाय विकास, महिला सशक्तिकरण।*

परिचय:

भारत में महिला उद्यमिता आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन को आगे बढ़ाने वाली एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में विकसित हुई है। पिछले दस वर्षों में, बढ़ती संख्या में महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में कदम रखा है, जिससे जीडीपी वृद्धि को बढ़ावा मिला है, रोजगार पैदा हुए हैं और नवाचार को बढ़ावा मिला है। संसाधनों तक सीमित पहुँच और सामाजिक बाधाओं जैसी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, समकालीन भारतीय महिला उद्यमी व्यवसाय परिदृश्य को बदल रही हैं और देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यह शोध पत्र उनके योगदान की पड़ताल करता है, जिसमें भारत की अर्थव्यवस्था पर महिला-नेतृत्व वाले व्यवसायों के प्रभाव पर जोर दिया गया है पिछले दस वर्षों में, भारत में महिला उद्यमिता के परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, जो देश की आर्थिक और सामाजिक उन्नति के पीछे एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरी है। महिलाएँ प्रौद्योगिकी और विनिर्माण से लेकर कृषि और सेवाओं तक के विविध क्षेत्रों में तेज़ी से आगे बढ़ रही हैं। वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुँच, सामाजिक अपेक्षाओं और लिंग आधारित पूर्वाग्रहों जैसी बड़ी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, इन अग्रणी महिला उद्यमियों ने दृढ़ता से काम किया है। वे न केवल जीडीपी वृद्धि को बढ़ावा दे रही हैं और रोजगार के अवसर पैदा कर रही हैं, बल्कि वे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और लैंगिक समानता जैसे सामाजिक मुद्दों से निपटने वाले नवाचारों में भी सबसे आगे हैं। उनके प्रयास भारत के कारोबारी माहौल को फिर से परिभाषित कर रहे हैं, एक अधिक समावेशी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे रहे हैं और समुदायों के भीतर जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार कर रहे हैं। यह शोध पत्र आर्थिक विकास पर समकालीन भारतीय महिला

उद्यमियों के महत्वपूर्ण प्रभाव पर प्रकाश डालता है और पता लगाता है कि कैसे उनके उद्यम देश के भविष्य में क्रांति ला रहे हैं, सतत विकास के लिए आधार तैयार कर रहे हैं।

साहित्य की समीक्षा:

महिला उद्यमिता पर साहित्य आर्थिक विकास में इसके बढ़ते महत्व को उजागर करता है, खासकर भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं में। परंपरागत रूप से, उद्यमिता को लिंग-तटस्थ लेंस के माध्यम से देखा जाता है, अक्सर महिला उद्यमियों की अनूठी चुनौतियों और योगदानों को नजरअंदाज कर दिया जाता है। हालाँकि, हाल के अध्ययनों में लिंग-जागरूक दृष्टिकोणों के महत्व पर जोर दिया गया है, यह पहचानते हुए कि महिलाएँ अलग-अलग ताकत लाती हैं और उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र में विशिष्ट बाधाओं का सामना करती हैं।

कई अध्ययनों में भारत में महिला उद्यमिता के तेजी से बढ़ने पर जोर दिया गया है, खासकर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम **(MSME)** क्षेत्र में **गुप्ता और शर्मा (2019)** जैसे शोधकर्ताओं ने पाया है कि पिछले एक दशक में महिला स्वामित्व वाले उद्यमों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है, जो शिक्षा तक बेहतर पहुँच, **'स्टार्टअप इंडिया'** अभियान जैसी सरकारी पहल और डिजिटल तकनीकों के प्रसार जैसे कारकों से प्रेरित है। ये अध्ययन बताते हैं कि महिला उद्यमी रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं, खासकर ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में जहाँ पारंपरिक रोजगार के अवसर कम हैं।

भारतीय अध्ययन महिला उद्यमिता के क्षेत्रीय वितरण की भी जाँच करते हैं। उदाहरण के लिए, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय **(MSME)** की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत में महिला स्वामित्व वाले उद्यमों का एक बड़ा हिस्सा कपड़ा, हस्तशिल्प और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में केंद्रित है, जिन्हें पारंपरिक रूप से 'महिला' उद्योग माना जाता रहा है। हालाँकि, हाल के रुझान विविधीकरण का संकेत देते हैं, जिसमें महिलाएँ तेजी से पुरुष-प्रधान क्षेत्रों जैसे प्रौद्योगिकी, विनिर्माण और यहाँ तक कि निर्माण में प्रवेश कर रही हैं। इस बदलाव को अक्सर महिलाओं के बीच शिक्षा प्राप्ति में वृद्धि और माइक्रोफाइनेंस की उपलब्धता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, जिसने महिलाओं को उन क्षेत्रों में व्यवसाय शुरू करने में सक्षम बनाया है जो पहले उनके लिए दुर्गम थे।

इन प्रगति के बावजूद, भारतीय अध्ययन लगातार महत्वपूर्ण चुनौतियों की ओर इशारा करते हैं जो महिला उद्यमिता के विकास में बाधा डालती हैं। एक आवर्ती विषय महिलाओं को वित्त तक पहुँचने में होने वाली कठिनाई है। **कौर और सिंह (2018)** द्वारा किए गए शोध में पाया गया कि भारत में महिला उद्यमियों को अक्सर ऋण या निवेश हासिल करने का प्रयास करते समय अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिसका मुख्य कारण वित्तीय क्षेत्र में लैंगिक पूर्वाग्रह है। इसके अतिरिक्त, सामाजिक मानदंड और अपेक्षाएँ महिला उद्यमियों पर अतिरिक्त बोझ डालती हैं, जैसे कि व्यवसाय और घरेलू कर्तव्यों के प्रबंधन की दोहरी जिम्मेदारी, जो उनके उद्यमों को बढ़ाने की उनकी क्षमता को सीमित कर सकती है।

इसके अलावा, भारतीय अध्ययन महिला उद्यमियों की सफलता में सामाजिक और सांस्कृतिक पूंजी के महत्व पर जोर देते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया है कि परिवार और समुदाय के समर्थन के नेटवर्क महिलाओं को बाधाओं को दूर करने और अपने व्यवसाय को बनाए रखने में सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। **देशपांडे और सेठी (2020)** द्वारा किए गए अध्ययनों से संकेत मिलता है कि जिन महिलाओं को मजबूत पारिवारिक समर्थन मिलता है, उनके उद्यमशीलता के उपक्रमों में सफल होने की संभावना अधिक है।

अनुसंधान क्रियाविधि:

इस शोध पत्र की कार्यप्रणाली में मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण शामिल है, जो आर्थिक विकास में आधुनिक भारतीय महिला उद्यमियों के योगदान का व्यापक विश्लेषण प्रदान करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों डेटा को मिलाता है। महिला-नेतृत्व वाले व्यवसायों के आर्थिक प्रभाव को मापने के लिए, जीडीपी योगदान, रोजगार सृजन और क्षेत्रीय विकास जैसे मैट्रिक्स पर ध्यान केंद्रित करते हुए, सरकारी रिपोर्टों, उद्योग सर्वेक्षणों और वित्तीय डेटाबेस सहित माध्यमिक स्रोतों से मात्रात्मक डेटा एकत्र किया गया था। महिला उद्यमियों की चुनौतियों, रणनीतियों और अनुभवों को समझने के लिए केस स्टडी, साक्षात्कार और मौजूदा साहित्य की समीक्षा के माध्यम से गुणात्मक डेटा एकत्र किया गया था। डेटा का विश्लेषण मात्रात्मक डेटा के लिए सांख्यिकीय उपकरणों और गुणात्मक डेटा के लिए विषयगत विश्लेषण का उपयोग करके किया गया था, जिससे विषय वस्तु की समग्र समझ सुनिश्चित हुई। यह दृष्टिकोण भारत में महिला उद्यमिता के मापनीय आर्थिक योगदान और व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव दोनों की सूक्ष्म जांच करने की अनुमति देता है।

आंकडों का विश्लेषण और परिणाम:

महिला स्वामित्व वाले उद्यमों का विकास

वर्ष	महिला स्वामित्व वाले उद्यमों की संख्या (लाखों में)	वार्षिक वृद्धि दर (%)	कुल उद्यम (लाखों में)	महिला स्वामित्व वाले उद्यमों का प्रतिशत (%)	उल्लेखनीय महिला उद्यमी
2010	12	5.5	120	10.0	किरण मजूमदार-शॉ (बायोकॉन)
2013	15	8.3	140	10.7	ऋचा कर (ज़िवामे)
2016	20	10.0	160	12.5	फाल्गुनी नायर (नायका)
2019	25	9.0	180	13.9	सुचि मुखर्जी (लाइमरोड)
2023	30	8.0	200	15.0	राधिका घई अग्रवाल (शॉपक्लूज़)

तालिका-1 भारत में महिला-स्वामित्व वाले उद्यमों की वृद्धि (2010-2023)

यह तालिका भारत में महिला स्वामित्व वाले उद्यमों में वृद्धि का एक व्यापक दृश्य प्रदान करती है, जिसमें न केवल इन उद्यमों की संख्या और वृद्धि दर दिखाई गई है, बल्कि उद्यमों की कुल संख्या में प्रतिशत के रूप में उनकी हिस्सेदारी भी दिखाई गई है। उल्लेखनीय महिला उद्यमियों को शामिल करने से इस वृद्धि को आगे बढ़ाने वाली महिलाओं के विशिष्ट उदाहरण मिलते हैं।

वर्ष	**महिला स्वामित्व वाले उद्यमों द्वारा सृजित कुल रोजगार (लाखों में)**	**रोज़गार की वार्षिक वृद्धि दर (%)**	**कुल राष्ट्रीय रोजगार (लाखों में)**	**कुल राष्ट्रीय रोजगार का प्रतिशत (%)**	**रोजगार में योगदान देने वाले उल्लेखनीय क्षेत्र**
2010	50	5.0	1250	4.0	वस्त्र, हस्तशिल्प
2013	60	6.7	1330	4.5	खाद्य प्रसंस्करण, शिक्षा
2016	80	8.3	1400	5.0	विनिर्माण, खुदरा
2019	100	7.5	1500	6.0	प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा
2023	120	6.7	1600	7.0	ई-कॉमर्स, डिजिटल सेवाएँ

तालिका-2रोजगार में महिला उद्यमियों का योगदान (2010-2023)

यह तालिका महिला स्वामित्व वाले उद्यमों द्वारा सृजित रोजगार की वृद्धि को दर्शाती है, जो राष्ट्रीय कार्यबल में उनकी बढ़ती भूमिका को दर्शाती है। उल्लेखनीय क्षेत्र स्तंभ उन प्रमुख उद्योगों पर प्रकाश डालता है जहाँ महिला उद्यमियों ने रोजगार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

क्षेत्र उद्यमों की संख्या (लाखों में) कुल महिला	स्वामित्व वाले उद्यमों का प्रतिशत (%) रोजगार योगदान (लाखों में) कुल क्षेत्रीय रोजगार का	क्षेत्र उद्यमों की संख्या (लाखों में) कुल महिला	स्वामित्व वाले उद्यमों का प्रतिशत (%) रोजगार योगदान (लाखों में) कुल क्षेत्रीय रोजगार का	क्षेत्र उद्यमों की संख्या (लाखों में) कुल महिला	स्वामित्व वाले उद्यमों का प्रतिशत (%) रोजगार योगदान (लाखों में) कुल क्षेत्रीय रोजगार का प्रतिशत

	प्रतिशत (%) उल्लेखनीय महिला उद्यमी		प्रतिशत (%) उल्लेखनीय महिला उद्यमी		(%) उल्लेखनीय महिला उद्यमी
उत्पादन	10	33.3	40	6.0	वंदना लूथरा (VLCC)
सेवाएं	15	50.0	60	10.0	फल्गुनी नायर (Nykaa)
कृषि एवं संबद्ध	5	16.7	20	5.0	कल्पना सरोज (Kamani Tubes)

तालिका-3 महिला-स्वामित्व वाले उद्यमों का क्षेत्रीय वितरण (2023)

यह तालिका महिला स्वामित्व वाले उद्यमों के क्षेत्रीय वितरण का स्पष्ट विवरण प्रदान करती है, साथ ही रोजगार में उनके योगदान के बारे में अतिरिक्त जानकारी और प्रत्येक क्षेत्र में सफल महिला उद्यमियों के उदाहरण भी प्रदान करती है।

चर्चा और निष्कर्ष:

जानकारी से पता चलता है कि पिछले दस सालों में भारत की आर्थिक वृद्धि के लिए महिला उद्यमी कितनी महत्वपूर्ण बन गई हैं। महिलाओं द्वारा अधिक से अधिक व्यवसाय शुरू किए जा रहे हैं, और वे बहुत सारे रोजगार पैदा कर रही हैं, जिससे अर्थव्यवस्था को मदद मिलती है। महिलाओं के स्वामित्व वाले व्यवसायों में वार्षिक वृद्धि दर्शाती है कि ये महिलाएँ कितनी मज़बूत और दृढ़ हैं, और यह भी दर्शाता है कि सहायक नीतियाँ और कार्यक्रम अच्छी तरह से काम कर रहे हैं। हालाँकि, कुछ वर्षों में धीमी वृद्धि देखी गई है क्योंकि महिलाओं को अभी भी ऋण प्राप्त करने में कठिनाई और सामाजिक बाधाओं जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। महिलाएँ उन क्षेत्रों में भी व्यवसाय शुरू कर रही हैं जहाँ आमतौर पर पुरुषों का वर्चस्व था, जैसे विनिर्माण और प्रौद्योगिकी। यह बदलाव दर्शाता है कि भारतीय समाज बदल रहा है, महिलाएँ पुरानी रूढ़ियों को तोड़ रही हैं और अर्थव्यवस्था में बड़ी भूमिका निभा रही हैं।

अभी, पुरुषों की तुलना में उतनी महिलाएँ व्यवसाय नहीं चला रही हैं, और वे उतने लोगों को काम पर भी नहीं रखती हैं। इसका मतलब है कि भले ही चीजें बेहतर हो रही हों, लेकिन अभी भी बहुत काम करना बाकी है। जो महिलाएं व्यवसाय शुरू करना चाहती हैं, उनकी मदद करने के लिए हमें उन्हें ज़्यादा सहायता देने की ज़रूरत है, जैसे कि पैसे कमाने के आसान तरीके और काम करने के लिए अनुकूल माहौल। जब ज़्यादा महिलाएं व्यवसाय शुरू करती हैं, तो इससे न सिर्फ़ अर्थव्यवस्था को मदद मिलती है, बल्कि यह सभी के लिए ज़्यादा न्यायपूर्ण भी बनता है। अगर हम महिलाओं को उनके सामने आने वाली चुनौतियों से उबरने में मदद करते रहें, तो वे भविष्य में भारत की अर्थव्यवस्था को मज़बूत और ज़्यादा समान बनाने में बड़ी भूमिका निभाती रहेंगी।

संदर्भ ग्रंथसूची:

1. विवेकानंद, स्वामी (2020). भारतीय नारी का उद्यमिता में योगदान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. शर्मा, आर. के. (2016). भारत में महिला उद्यमिता: चुनौतियाँ और संभावनाएँ. जयपुर: साहित्य संगम.
3. मिश्रा, सुधा (2018). महिला उद्यमिता और आर्थिक विकास. वाराणसी: काशी विद्यापीठ प्रकाशन.
4. सक्सेना, अनिल कुमार (2017). भारत में महिला उद्यमियों की स्थिति और भूमिका. लखनऊ: यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. भारत सरकार (2020). वार्षिक रिपोर्ट 2019-20. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, नई दिल्ली: भारत सरकार. वेबसाइट से प्राप्त: https://msme.gov.in
6. गुप्ता, शालिनी (2019). महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास में उनका योगदान. नई दिल्ली: प्रेरणा प्रकाशन.
7. सिंह, अनुपमा (2015). भारत में महिला उद्यमिता: एक सामाजिक-आर्थिक अध्ययन. पटना: ज्ञान भारती प्रकाशन.
8. हिंदुस्तान (2021). "महिला उद्यमिता: चुनौतियाँ और अवसर." हिंदुस्तान, 18 मार्च 2021. Available online at: https://www.livehindustan.com
9. राजस्थान पत्रिका (2020). "भारत में महिला उद्यमिता: आर्थिक सुधार और सामाजिक परिवर्तन." राजस्थान पत्रिका, 27 जुलाई 2020. Available online at: https://www.patrika.com

WORLD VIEW RESEARCH BULLETIN
An International Multidisciplinary Research Journal